ओम

धर्मसिद्धान्त

विश्वेश्वरदयालु शर्म्मा रचित

जिसमें

वैदिक मतावलम्बी पुरुषो के कर्तव्या

कर्तव्यका वेदशास्त्रविहित वर्णन है

निरंकारी यंत्रलोदियाने में मुद्रित हुआ

तैदाद जिल्द ५००   कीमत ॥

ओ३म्

ब्रह्मसिद्धान्तम्

विवेक तत्व बोधिनी

जिसको॥

विश्वेश्वर दयालु शर्म्मा नें सर्व स्वदेशी भाईयों के हितार्थ रच कर लाला गणेशी लाल की इच्छानुसार

छपवाई

निरंकारी प्रेस लोदियाने में पं० ऋषिराम के प्रबंध से मुद्रित हुई

तेदाद जिल्द ५००   कीमत

ॐ विश्वानि देव सवित र्दुरितानि परा सुव यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥

दोहा

सर्व शक्ति मन जगत पति निर्विकार सुखधाम ॥ वरुण इन्द्र शिव विष्णु अज जासु सना तन नाम ॥ १ ॥ उप जावन पालन प्रलय न्याय नियम युत जासु ॥ सोई सना तन पूज्य है विश्व उपासक तासु ॥ २ ॥ वर मागौं कर जोरि दोउ देहु कृपा करि नाथ ॥ तोहि तजि दीन दयालु नहिं और हि नावौं माथ ॥ ३ ॥ जब जहँ जन्मौं कर्म

बधा तब तहँदीन दयाल ॥ तब भक्ती मन में रहे पापमिटैं तत्काल ॥ ४ ॥ दुर्गुण अरु दुव्यसन दुख कर्म्म सहित मतक्रूर ॥ इन सब से मोहि विलग करि देहु ज्ञान भर पूर ॥ ५ ॥ देखि पुरातन ग्रंथ अरु शुभ आशाय उर आनि ॥ लिखों आर्य्यो वर्त की सकल व्यवस्था छानि ॥ ६ ॥ जाहि देखि सद्धर्म्म दिशि सभकी श्रद्धा होय ॥ साधै जग शुभ चारिफल सकल अविद्या खोय ॥ ७ ॥ ऐसे सुन्दर काज में पतित उधारन हार ॥ बुधिबल विद्या दे मुझे लिखों सुनीति विचार ॥ ८ ॥ सज्जन विद्वज्जनन सों कहौं सुविनय पुकारि ॥ जो कछु देखों चूक सो प्रियबर पढो सुधारि ॥ ९ ॥

वृंहस्पति दिवस पूर्वाह्ण में अरु वैवस्वत कर राज्ञ॥ अष्टा विंशति चौ युगी प्रथम चरण कलि भाज॥ १०॥ उनइस सै चौवालिस विक्रम सम्वत जानि॥ शुक्ला नवमी तिथि मिती कातिक लिखि शुभ मानि॥ ११॥ ऋ धातू से बनें हैं आर्य शब्द इमि जानु॥ सत्यासत्य विवेचक श्रेष्ट अर्थ पहिचानु॥ १२॥ शब्द आर्य्य आवर्त को भयो संध्य संयोग॥ बनो आर्य्यावर्त सोइ जानत सज्जन लोग॥ १३॥ बसैं आर्य्यावर्त महँ वेद मतालव लीन॥ मानैं सत्य असत्य तजि तेई आर्य्य प्रवीन॥ १४॥ करैं अकारण सारि अरु जिन हिन सत्य सु हाय॥ वेद हीन पाखण्ड रत निज हस्ब पद पाय॥ १५॥ देश आर्य्यावर्त

हैं आर्य्ये करैं जहँ बास॥मनुं ऽ न सारी सास्त्र
की सीमा करौं प्रकाश॥२६॥

चौपाई २

उत्तर ओर हिमालय जांके॥
दक्षिण विंध्याचल गिरितांके॥१
पूर्व ब्रह्म पुत्र की धारा॥
पश्चिम सिंधु नदी हठकारा॥२
सोई आर्य्यावर्त कहावै॥
यदि भूछत्रक हो तो भावै॥३॥
जब ही सृष्टि अनादि प्रवाही॥
रचन कीन प्रभु न्याय निवाही॥४॥
अगणित ऽस्त्री पुरुष बनाये॥
सम हित वैदिक धर्म्म बताये॥५॥

भये आदि ज्ञानी ऋषि अग्नी ॥
निज उत्तम कर्मन की लग्नी ॥६
अन्तर्यामि रूप ऋग्वेदा ॥
तिनहि बतायो भंजन खेदा ॥७
अरु वायु ऋषि प्रति जगस्वामी ॥
प्रगट्यो यजुर्वेद प्रन मामी ॥८॥

दोहा

साम ज्ञान आदित्य विच अथर्वाङ्गिरहि दीन ॥
चारो वेदन दान करि प्रभु जीवन हित कीन ॥

चौपाई

चार महर्षिन पायो ज्ञान ॥
दीनो जग वैदिक व्याख्यान ॥९
विद्या योग ध्यान में पाय ॥

तौ पातञ्ज्जलि जी मुनि राय। ।१०

योग शास्त्र रचि और. सुनाय॥

दीनो सभ हिन ज्ञान सिखाय॥११

रचो न्याय गौत्तम मुनि राज ॥

कारण हीन नमान्यो काज॥१२

चित को जबही थिर कै पाय ॥

तो कारण दि मुनि मन चस चाय॥१३

वैशेषक शुभ शास्त्र वनाय ॥

दीनों काल कथा समु जाय॥१४।

जैमिनि पूर्व मिमांसा कीन ॥

कर्म प्रधान प्रथम लिखि दीन॥१५

कपिल दीन उत्तम उपदेश ॥

कहत सांख्य तेहि हर न कलेश॥१६

दोहा

विन संजोग न बनत कछु कहत सांख्य समुझाय॥
जाके देखत मोह भ्रम अतिहि शीघ्र मिट जाय॥१८॥
लिख्यो व्यास वेदान्त मैं करता एक प्रधान॥
जाहि भजे से जीव कर होत परम कल्यान॥१९॥
यह षट् शास्त्र उपाङ्ग हैं वेदन के व्याख्यान॥
लिख्यो जिन्है मिलि षट् मुनिन धरि ईश्वर कर ध्या
न॥२०॥पातञ्जलि कृत व्याकरण कृत मुनि या-
स्क निरुक्त॥ शिक्षा ध्याई पाणिनि पिंगल छन्द सं
युक्त॥२१॥मन्वादिक कृत मानव कल्पसूत्र विख्या
त॥ आश्वलायनादिक लिखित श्रौत सूत्र गुण ज्ञात
२२॥लिखि वशिष्ठ ज्योतिष विषय ग्रंथ सूर्य्य सिद्धा
न्त॥ ज्योतिष गोल भू गोल की शिक्षा कर निर भ्रान्त॥२३॥

यह षट मिलि वेदाङ्ग हैं विविधि मुनिनन कृत जो
य॥ इन्हें पढ़ै जो ध्यान दे वेदान्ती सो होय ॥२४॥
आयु धनु गान्धर्व अरु अर्थ वेद ये चार ॥ ॥
वेदन के उप वेद हैं विद्या विविधि प्रकार ॥२५॥
शत पथ गो पथ ऐतरे संहित सो साम विधान॥
वेदन के चौ ब्राह्मण पढ़े मिटत अज्ञान ॥२६॥

चौपई छन्द

यह जो लिखे ग्रंथ सभ प्रथम हि वेदहि सो विल
गाने ॥ यक यक विषय सविस्तर लिखि कै अ
भलि भांति बरवाने ॥ यद्यपि नाम अनेक नरारवे
तदि वेद हि की सारवा ॥पर जग दीश वेद को न
तो मूलक पुस्तक रारवा ॥ १॥ वेद हि यक मध्यम
पुस्तक है जेहि पढ़ि ब्रह्मा ज्ञानी चतुरानन की

पदवी पायो कंठकी शुभ वानी॥ वेदहि स्वतः
प्रमाण सकल विधि सभ विद्यन भण्डारा॥ अन्य
ग्रंथ सभ परत प्रमाणी प्रभु कृत अपर म्यारा॥ २॥

दोहा

वेदन के अनुकूल जे ग्रंथ प्रकाशक सोय॥ ॥
जे विरुद्ध ते त्याज्य सभ आर्य्य न मानै कोय॥ २७॥
ईश्वर रचित वेद अरु अन्य मनुज कृत ग्रंथ॥
ईश ज्ञान निस्शंक है जीव भ्रमि तव हु पन्थ॥ २८

चौपई छन्द

जव कछु भूल पुरानन आवे ताहि मनुस्मृति नाशै॥
ताकी भूल शास्त्र षट् खोवै सभ कह वेद प्रकाशै॥
यहां ... सभ आर्य्य प्रमानी ऋषि मुनि संतन माने॥
तिन मह जिमि ... आश्रम मूलक सज्ञान पुरुषन जाने॥

सो सभ देखि विचार भली विधि लिखो सकल निरवा
री॥ जेहि सो मिटै मोह भ्रम सब कर होय धर्म उजि
यारी॥७॥

दोहा

यजुर्वेद महँ जिमि लिखा अलङ्कार की भांति॥
सो प्रथमै वर्णन करौं सुनि जिय सुख सरसाति॥२॥
मुख सों विप्रोत्पन्न भे भुज सों राज कुमार॥ ॥
ऊरु सों वैश्यो पराजित पद सों शुद्र असार॥३॥
मुख सों विद्या बाहुबल ऊरु गमनागम जान॥ ॥
पद सों नीच निरच्छरहि सत्य अर्थ उर आनु॥३॥

कवित्त घनाक्षरी

जैसे मुख यथा योग्य भोजन सों पालय ... वैसे
मुख्य गुणन सों विप्र पद जानिये॥ जैसें दुष्ट ताड़

नमैं बाहु वल उत्तम हैं तैसे शूर बीर नकूं राज पुत्र मानियें ॥ जिमि कटि भार को शरीर के सँभा रत है इमि वैश्य धन द्वार देश थिर ठानियें ॥ जिमि अनु गामी पाद नीचे हैं शरीर मध्य तिमि विश्व वेद हीन शुद्र ही वखानियें ॥

कवित्त सवैया

साधित इन्द्रिन वेद पढै औ पढाय कै यज्ञ करै औ करावै ॥ दान को लेदै धर्म समेत औ ज्ञान के कोश हि नित्य वढावै ॥ सत्य असत्य विचारि भली विधि भूपन को शुभ नीति सिखावै ॥ स्वच्छ स्व भावी विनीति रहै सोइ विश्व प्रतिष्ठित विप्र क है ... ॥ वेद पढै अरु यज्ञ रचै नित्य दान करै वल वाहु के पा...युद्ध विधान में होय प्रवीण प्रजे

अति प्राण हुं से प्रियता कै॥ धर्म्म हि मण्डि अधर्म्म हि खण्डि वनै गो विप्र सुरक्षन याकै॥ क्षित्र वड़ो सोइ राज कुमार है दीन को न्याय करै मन लाकै॥ वाणिज औ कृषि कर्म्म करै अरु वेद पढ़ै पशु पाल न जानै॥ दान सुपात्रन को नित देय करै धन वृद्धि सु धर्म्म हि मानै॥ छोडि छलै वनि आशु समान स दा विद्वानन कहँ सन्मानै॥ जँघ वली कटि वहूर है सोई वैश्य सु धर्म्मी विज्ञ वखानै॥ जानै न वेद न धर्म्म क्रिया जेहि होय न सत्य असत्य विचारा॥ वुद्धि मलीन रहै नित ही अरु सेवहि कर्म्म कह्यो यस हारा॥ ताहि कहें वुध शूद्र सदा यहि भांति लि... मतु धर्म्म मझारा॥ विज्ञ वनै द्विज ... द्र हि सों अ रु शूद्र वनैं द्विज कर्म्म ... ता॥

सोरठा

ब्राह्मण को तप ज्ञान क्षत्री को रक्षा करण ॥
वैश्य वार्ता मान शूद्रन के बल से बही ॥
वर्णाश्रम रीति सदाचार यहि देश को ॥
साधे उपजत प्रीति होत सुफल ता नर जनम ॥

दोहा

अठयें अथवा सोरहे वर्ष पास ऋतु राज ॥
ब्राह्मण कुल उपनयन भल कह्यो मनू महं राज ॥ २ ॥
ग्यारहवें बाईसवें साल राज सुत केर ॥ ग्रीष्म
ऋतू उपनयन शुभ करत न लावें वेर ॥ ३ ॥
...रहवें चौबीसवें साल वैश्य कुल माहि ॥ व
सींऋ(तु) ...नयन हित भाख्यो मनु सम याहि ॥ ३ ॥
एहि से आगे ... की पतित सावित्री होत ॥

कह्यो द्वितीयाध्याय विच मनू धर्म के सोत॥३५॥

चौपई

उपनयन भये तद पाछे॥
सुनु आश्रम की विधि आछे॥१७
गुरु के कुल में करि बासा॥
तजि के सभ दूषित आसा॥१८
छत्तीसकि वर्ष अठारा॥ ॥
श्रुति शास्त्र पढे गुरु द्वारा॥१९॥
तप है यह उत्तम भारी॥ ॥
जो साधे सोई ब्रह्मचारी॥२०
जब पाय चुके सभ शिक्षा॥ ॥
तब अंत में होय परीक्षा॥२१
यदि होय सुशील रु ज्ञानी॥

पद ब्राह्मण को मन मानी॥ २२॥
बुध गौ मिल सज्जन देही॥
श्रम ता साफल्य करै हीं॥ २३॥
यदि है अति शौर्य वल धारी॥
धनु वैदिक धर्म्म प्रचारी॥ २४

दोहा

देत ताहि क्षत्री वरण सकल भांति मन मानि॥
राज नीति सभ भाषि कै आर्य्य सनातन जानि॥ २५

चौपाई

यदि गणित भली विधि जानैं॥
पशु पाल कृषी विधि आनैं॥ २६
तेहिं वैश्य कदेहिं प्रतिष्ठा॥
चलि आई सनातन निष्ठा॥ २७

जोपढ़ै इतने दिन तांई ॥ ॥
गुण कर्म्म न एकहु पाई ॥२७॥
तेहि शूद्र कहैं सभ कोई ॥ ॥
कोइ जन्मतनां द्विज होई ॥२८॥
यदि विप्र रहा लंकेशा ॥ ॥
कह्यो राक्ष सही सभ देशा ॥२९॥
शूद्री घर नारद जायो ॥ ॥
मुनि नायक को पद पायो ॥३०॥
पढ़ि देखि अगस्ति कहानी ॥ ॥
समुझै सभ सज्जन प्राणी ॥३१॥
निज कर्म्मन सों सभ कोई ॥ ॥
नित उत्तम मध्यम होई ॥३२॥

दोहा

ब्रह्म चर्य्य जनु मूल है वरण विविधि तरु डार ॥
सुख सम्पति फल फूल है माली वुद्धि विचार ॥ ३७॥

चौपई

ब्रह्म चर्य्य यहि भांति निवाही ॥ ॥
गृही बनै वर्णौ तुम पाही ॥ ३३ ॥
शुल न अरु कर्म पाप समु काला ॥
पाय सुलच्छ रिग व्याह हि वाला ॥ ३४ ॥
रचहि स्वयम्वर राज कुमारा ॥ ॥
पाप युद्ध विद्या पति प्यारा ॥ ३५ ॥
कन्या वर निज नयन निहारी ॥
उर जय माल देय पुनि डारी ॥ ३६ ॥
ब्राह्मण कुल जिमि होहि विवाहा ॥
सुनहु सकल सज्जन करि चाहा ॥ ३७ ॥

जिमि मनु आठ व्याह विधि भाखे॥
निंदित तजि वंदित अभिलाखे॥३८
ब्रह्मचर्य आश्रम शुभ पाली॥
अरु पढ़ि वेद विप्र कुल चाली॥३९
यथा शक्ति लेदे कछु दाना॥ ॥
करत रहें पुनि व्याह सुजाना॥४०॥

दोहा

व्याह रीति वर्णन करौं मानव धर्म्म निहारि॥ ॥
सोई मानन योग्य है सभही कहें उर धारि॥३७॥

चौपाई

कतहुन धर्म्म वधिक दुख दाई॥
दायज प्रथाम नृवत लाई॥४१॥
पट भूषण वर कन्यहि देई॥ ॥

करैं विवाह ब्रह्म विधि येई॥४२॥
कन्यहि अलंकार युत लाई॥
यज्ञ मध्य सज्जन प्रभु माई॥४३॥
देहि ऋतुजकहं सभ सन्मानी॥
देव विवाह रीति भलि जानी॥४४॥
गो ला वृष यक वर से लेई॥ ॥
करै विवाह आरशी तेई॥४५॥
वरहि सौंपि कन्यहि उपदेशी॥
धर्म आचरण सकल सुदेशी॥४६॥
कन्या वरहि देहि सुख मानी॥ ॥
व्याह प्रजापति रीति बखानी॥४७॥
यह मनु धर्म बीचि लिखि राखा॥
तृतियाध्याय गहौदृढ भाखा॥४८॥

दोहा

यही रीति है वैश्य कुल धन कुल भलि विधि जानि ॥
वर कन्या को योग लहि गहहि पर स्पर पानि ॥ ३८ ॥
शूद्र वरण बिद्या पतित बिना मंत्र करि ब्याह ॥ ॥
बनै ग्रहस्थी करै नित सेवा त्यागि कुराह ॥ ३९ ॥
कन्या षोड़स वर्ष की ब्रह्म चारिणी होय ॥ ॥ ॥ ॥
चौविस को वर लिख्यौ है चार कशुभ्रुत जोय ॥ ४० ॥
यह ब्यवस्था सभ लिख्या ह की चारौं बर्णन हेतु ॥ ॥
अर्थ धर्मका मादि फल मोक्ष पदारथ देत ॥ ४१ ॥ ॥
एक नारि व्रत नर करै तीय पति व्रत साधि ॥ ॥
ऋतु गामी होय्य पर स्पर नाशै सकल उपाधि ॥ ४२ ॥
पंच यज्ञ नित नियम युत करै ग्रहस्थ विचारि ॥
न्याय पूर्वक काज करि लेवै जन्म सुधारि ॥ ४३ ॥

कवित्त सवैया

संचय करै घन धान्य की औ निज पोषि कुटुम्ब
सुकर्म्म वनावै ॥ साधु गुरू द्विज संगति कै सद्धर्म्म
के कोशहि नित्य वढ़ावै ॥ वेद पढ़ै औ सुनै गुनि
कै सभ पापन की जरस्वोद वहावै ॥ विश्व करै नि
त राम को आस भरोस सो ठीक गृहस्थ कहावै ॥ ॥

चौपाई

आधी वयस वसत गृह माही ॥ ॥
वीत जाय जव पुत्रन पाही ॥ ४९ ॥
सुत के सुत जेहि त्राण हो जावे ॥
तुरत सो वान प्रस्थ उठावे ॥ ५० ॥
वनी वनै तजि विषय विलासा ॥
करै सकल विद्या अभ्यासा ॥ ५१ ॥

ब्रह्म चर्य्य विच जो गुरु द्वारा ॥ ॥
पढै उ सो भलि विधि करै विचारा॥५२
मानस शंका सकल निवारी ॥ ॥
होय असंक धर्म्म व्रत धारी॥५३॥
करि सत्संग सत्य पथ्य साधी ॥ ॥
सिखे योग की अचल समाधी॥५४॥
या विधि जवहि चौथपन आवै ॥
पर उपकार तवहि मन लावै॥५५॥
लै सन्यस्य वेद मत पाली ॥ ॥ ॥
ज्ञान भानु की लाय उजाली॥५६॥
नासै तिमिर अविद्या केरा ॥ ॥
विचरै अतिथि रूप करि फेरा॥५७॥

दोहा

पक्षपात को त्यागि कै करै सबहि उपदेश ॥ ॥ ॥
शिखासूत्र तजि होय अभय नाशै जग भ्रम क्लेश ॥
ब्रह्मचर्य्य मह होत जिमि अपनो पुष्ट शरीर ॥
अरु गृहस्थ मह आन की मेट क्षुधा की पीर ॥ ॥ ॥
तैसे वानप्रस्थ मह निज आतमा सुधारि ॥ ॥ ॥
शुद्ध करै पुनि सबन कह संन्यासी मन मारि ॥ ॥॥

सृष्टिविषय

दोहा

सृष्टि नियम पुनि लिखों कछु जिमि प्रभु करत प्रसार
जासु सुने आनंद बढत छीजत मोह अपार ॥४४॥

चौपाई

महा प्रलय की रात अंधेरी ॥ ॥
सहस चतुर्युग गणना केरी ॥४५॥

जिमि निहार रवि सन्मुख सोहैं॥
तिमि सो निशि जग पतिहिन मोहे॥५६॥
महा रात्रि जेहि वेदन भाख्यो॥ ॥
कारण जगत जीव जह राख्यो॥६०॥
कारज जगत जीव के कर्मो॥ ॥
जानत ज्ञानन विनु प्रभु मर्म्मो॥६१॥
पुनि प्रभु महा प्रलय के पाछे॥ ॥
जीव कर्म जो जानत ग्राछे॥६२॥
न्याय नियम युत सृष्टि वनावै॥
मध्यम ऊंच नीच दर्शावै॥६३॥
जाकी जैसी होत कमाई॥ ॥ ॥
सो तैसो फल लहत सदाई॥६४॥
है सम कर प्रभु अंतर्यामी॥ ॥

सर्वशक्ति मन अलख अकामी॥६४॥

दोहा

भानु शशी नक्षत्र अरु पृथ्वी जग समुदाय॥ ॥

यथा रच्यो प्रभु पूर्वही सोई पुनि दीन बनाय॥६५॥

यथा अखण्ड एक रस ईश तथा पुनि ज्ञान ॥ ॥

तामें कछु न विरुद्धता पूरण प्रभु भगवान॥६६॥

कारण कर्ता ज्ञान अरु काल कर्म संयोग॥ ॥

बनत सदा कारज जगत करत जीव जेहि भोग॥६७

ईश्वर कर्ता जगत कर जो सर्वज्ञ अनंत॥ ॥

पालत ताड़त प्रजा कहँ जिमि पितु सुतहि अकंत॥६

चौपाई

यहि ते पतित उधारन ताही॥ ॥

कहत न्याय सज्जन निर्वाही॥६६॥

पिता पुत्र कहं जिमि सुखहेतू॥
चलत कुमारग ताड़त चेतू॥६७॥
जिमि सुत सुधरि जात यहि रीती॥
सकल सराहत तेहिं पितु प्रीती॥६८॥
यहि विधि ईश जीव कहं दण्डी॥
पतित उधारन विदित अखण्डी॥६९॥
ईश्वर जीव रु प्रकृत अनादी॥
हैं स्वरूप से स्रुति प्रति पादी॥७०॥
जिन कर कबहुं न होय अभाऊ॥
आगे सुनहु जो वस्तु नसाऊ॥७१॥
कारज जगत पुरुष को कर्म्मा॥
हैं संयोग वियोगी धर्म्मा॥७२॥
इन कहं कहत अनादि प्रवाही॥

जिमि सरिता की चाल अथाही॥७३॥

दोहा

दिन से प्रथम हि राति अरु रातिसे पहिले भानु॥
जिमि तिमि प्रलय रु सृष्टि कर भेद सत्य जिय जानु॥४९॥
जैसे ईश अनादि है वैसे बल क्रिय ज्ञान॥ ॥ ॥
तासु सदा से साथ है जिमि रवि आतप जान॥५०॥

चौपाई

जगदुत्पादक सर्व धारी॥ ॥
अलख अगोचर अज अविकारी॥७४॥
न्याई प्रभु सर्वान्तर्यामी॥ ॥ ॥
अगम अखण्ड अनंत अकामी॥७५॥
अगणित गुण जो कहि नहिं आवें॥
निर्गुण सगुण रूप श्रुति गावें॥७६॥

सभगुण प्रभके अनादि काली ॥
ताते बुद्धि निरुत्तर आली॥७७॥
जग दुत्पादन न्याय प्रनाली ॥
हे अनादि प्रभु संग विशाली॥७८॥
इन कर आदि न अंत क हावे ॥
किमि अल्पज्ञ तासु गुण गावे॥७९॥
ताते कहि न शकत कोइ ऐसे ॥
कबसे जगत कर्म है कैसे ॥ ८०॥
विविधि भांति के कर्म कराला ॥
विविधि काल फल मणि की माला॥८१॥

दोहा

कोइ दिन कोइ युग और कोइ मिलत कल्प के अंत॥
पुनर्जन्म तेइ विविधि विधि देत सदा जग कन्त॥५१

मातु पिता विनु होत जिमि वर्षा ऋतु के कीट ॥
प्रभु सदा तनिज शक्ति सों तिमि जग के विपलीट ॥५२
सब भूतन के कर्म जब या विधि के रह जात ॥
जिन्ह कर फल भोगन उचित महा प्रलय पश्चात ॥५३
तव ही कारज जगत कर कारण लहत वियोग ॥
वसत व्योम पर माणु वनि हरि इच्छित संयोग ॥५४
सकल जीव धर्मात्मन के मन रहत उछाह ॥ ॥
दुष्टन मन शंका वसत पाप कर्म को दाह ॥ ५५ ॥
मुक्ति जीव विचरत रहत व्यापक प्रभु के मांहि ॥
सदानन्द चिरकाल जहां मीचहु पहुंचत नाहि ॥५६

ब्रह्म गुण वर्णन

कवित्त घनाक्षरी

रूप रस गंध और शब्द ना त्वचा की नाड़ी जासु

वीच औ न जाको कछु वार पार है। जाको कछु
कारज न कारण है विद्यमान समन अधिक
जासे कतेहुं प्रचार है॥ जासु पति कव हुं भयो
न है न होय कतौ लिङ्ग हीन जग दीश सभ
को आधार है॥ जन्म औ मरन हीन एक रस वि
श्व नाथ भ्रमन कत हुं जाके निकट असार है॥५
विनु पग चलत सुनत विनु कान के नयनन
विना ही जग देखत तमासा है॥ नासिका विहीन
सभ गंधन ग्रहण करै रसना नहीं है पै गहत स्वा
द खासा है॥ कर से विना ही करै रचन सकल जग
वाणी के विहीन करै वचन विलासा है॥ विश्व
जो त्वचा विहीन सभ को छुवत वही एक माहा
देव सभ करैं जाकी आसा है॥६॥ प्राय: कहत

ब्रह्म होय एकै मायो पहित इश्वर बनत जो जगत
को बनावे है॥ फेरि सोइ ब्रह्म जब भ्रम में फस
त आप जीव बनि जात और सेवक कहावे है॥
प्रथम विचार करौ जाको शुद्ध सत्य पद तासु
के निकट झूठ कैसे को सोहावे है॥ छिति या पै
ध्यान देव ब्रह्म सर्वज्ञ रूप विश्व सोइ मूरख जो
तामे भ्रम गावे है॥ ७॥ कोई कोई कहत कि आपी
जग रूप बनो आपी सभ करत करा वतन और
है॥ यदि यहि सत्य बात उपादान आप बनो चेतन
से जड़ जग कैसे स्रोर भोर है॥ फेरि सत्य रूप ब्रह्म
जाको कबहुं न नाश जगत है छिन्न भिन्न करौनेकु
गोरहै॥ विश्व नित कारण के कारज में होय गुण
जग में ना ब्रह्म गुण न्याय से कुठौर है॥ ८॥ ॥॥

यदि जड़ द्रव्यन कों ब्रह्म करि मान लेव सारे जड़ द्रव्यन के दोष वामें लागि हैं ॥ ब्रह्म को है चेतन औ द्रव्यन को जड़ पद ब्रह्म सत्य मुक्त रूप द्रव्य नाश पागि है ॥ ताते वेद बुद्धि औ विचार बीच यही सत्य ईश्वर निमित्त आगे कर्म्म ही विभागी है ॥ यदि कर वावत करत वह आप ही तो पाप पुन्य को न डर वि अन्याय त्यागि है ॥ ९ ॥ प्रथम कहत एक ब्रह्म ही है सत्य और सकल असत्य फिर भ्रम कैसे मानते ॥ कहत उत जैसे जल मे तरंग वैसे ब्रह्म में पड़ी है भूल उत्तर व खानते ॥ पर जल वीच तो तरंग को पवन हेतु ब्रह्म मे बतावो भ्रम कैसे करि ठानते ॥ यदि कहौ माया सों प्रथम कहेउ एक ब्रह्म दूसरो कहां से झूठ लाय वामे सानते ॥ १० ॥ कोई कोई कहत कि जीव को रचत ईश्व

कहौकबकाहे औरकौराासेसमानसे॥पुनियदिवनो तोविगारवाकेसंगलगो जिन्हसेवनोतेआएकौन सेठिकानसे॥यदिकहोईशनिजतनसोवनायोजी वतनकहांकेसोजोआखंएड रहोज्ञानसे॥फेरिगुण कारणकेकारजमेचाहियतईशसर्वज्ञजीवकेस हैं नदानसे॥११॥कछुककहतईशसभहीमें व्याप मानपत्थरकीमूर्तिवनायपूजोरामको॥ वहि विश्वाससेसदाहीफलदेयसवेपहुंचतईश्वर कोपूजावाकेनामको॥यदिव्यापमानसभहीमें मानैबुद्धिमानफेरिकैसेपूजकेनरूपहेआकामको॥ विश्वराममूरतिमें पूजकमेंवसेरामरामरामहीको पूजेंकौनेकाजस्वामको॥१२॥ईशसभहीमेंव्याप मानहेआकाशवतद्रव्यनकोनाशपैनईशकोअ-

भाव है॥ जिमि घट मठके प्रथम हू औ मध्य अंतर हौ

है रहै गौ जो अकाश को अभाव है॥ जैसे घट मठ न

अकाश बने किसे काल औ न भयो कबहूं अका-

श से दुराव है॥ यहि भांति विश्व नाथ व्यापक अगा

ध रूप सभसे विलग औ निकट हू सुहाव है ॥ १३॥

दुक्ख मध्य सुख और आतम अनातम को चेतन को

जड़ शुचि अशुचि के ज्ञान को॥ नित्य में अनित्य

बुद्धि भ्रम है अविद्या के र भाख्यो महा ऋषि जी पतञ्ज

लि न जान को॥ याही भांति विश्व को जो मानै परि छि

न्न रूप सुन्यो न कबहुं उन्ह वैदिक प्रमाण को॥ विश्व

भानु वारि सों न मरग जिमि तृप्त होय वही भांति श्रम

होत निष्फल नदान को॥ १४॥ रंक को नृपति और भू

पति को रंक कहे साधु को असाधु और चोर कहे शाह को।

जैसे दोष लागत असत्य इन्ह वातन सो वंई जानो व
न्द कि ए मंदिर आयाह को ॥ विश्व होत जड़ की उपा
सना सो जड़ वृति चेतन सो आस होत चेतन प्रवाह
को ॥ १५ ॥ कछुक कहत नहीं जग को रचक कोई कार
ण जगत वनि विगरत आप है ॥ जहां पंच तत्व मि
लि जात हैं ठिकाने सिर जगत वनत नित विनहि
कलाप है ॥ हम तोर चक पितु वाको फिरि वाको वा
प याही भांति आगे जाको नाही कछु नाप है ॥ विश्व या
ही भांति वादी कहत अनादि सृष्टि आपने ही कृत्य सो
मिलत पुन्य पाप है ॥ १६ ॥ वादी को कथन है विचार जैसे
प्रमाण हीन जड़ रूप प्रकृतन आयु वनि पारे है ॥ यदि
कहे यह तो स्वभाव है प्रकृति ही को विना वोए वीज को
न अङ्कुरनि सारे है ॥ जव पंच तत्व आप मिलि नशकत

और मिलन ठिकाने सिर और के सहारे है ॥ फिरि तो
निमित भयो रहो ना स्वभाव गुण विश्व जो मिलावे सो
ई ईश्वर हमारे है ॥ १७ ॥ आगे जो कहत मातु पितु सेव
नत सब फेरि आदि जग कौन भांति भोप सार है ॥ यदि
हठ वश कहै जगत अनादि फेरि कार ज सदा ही से
कहावत असार है ॥ विश्व शोभ मान त्याग अनुराग ई
श्वर को वही कर्तार और जगत आधार है ॥ यदि जड़
द्रव्यन में आयु बल होत कछु होते वहु रवि शशि जि
हू को शुमार है ॥ १८ ॥

उपासना विषय

कवित घनाक्षरी

लिखौं जो उपासना कि युक्ति को विचारि देखि साधन
किये से सिद्धि मुक्ति सुखदायनी ॥ यमनियमा सन

औ प्राणायाम प्रत्याहार धारणा समाधि ध्यान अष्ट अंग भायनी॥ यही आठ अंग हैं उपासना के सिद्धि प्रदम अथितोइ तामे सुख उपजायनी॥ विश्व जो करै गो या को संजम विचार मान वही सुख खानि पाए मुक्ति आन पायनी॥ १९॥ यम विधान ॥ सभहि सों वैर छोड़ि प्रीति को संबंध जोड़ि पर धन हरण की वृत्ति विसरावई॥ सत्य ही को पद धारि इंद्रिन को ताड़ मारि वेद के विचारि ज्ञान धनहि बढ़ावई॥ विषय आभिमान सों अलान ही ठिकान करै यही पांच भांति को है यम जो कहावई॥ विश्व इन्ह पांचन को सत्य सन्मान किए विषहि या भूमि में उपासना को आवई॥ २०॥

नियम विधान

कवित्त घनाक्षरी

आगे सुनो नियम जो पांच ही प्रकार को है अन्तःक
रण औ शरीर शुद्ध राखिए॥ खान पान वस्त्रन सों होत
है शरीर शुद्ध हिया शुद्ध होत जव सत्य सत्य भाषि
ए॥ करि पुरुषारथ रु धर्म में प्रवृत्त होय स्वाद को संतो
ष ही के नित्य प्रति चाखिए॥ तपस्वा ध्याय पुनि ईश्व
र समर्प्पण सो विश्व हिया शुद्ध होय कहैं संत लाखि
ए॥ २१॥

आसन विधान

कवित्त घनाक्षरी

पुनि सुनो आसन भलो है सभ भांति सोइ जामे थिरता
इ मन आत मा को आवई॥ वायू को वहर करि नाक
मुख गुदा द्वार पुनि रसरस खैंच प्राणयाम लावई॥
मध्य मग तो पे पुनि प्राणयाम को जमाय औङ्कार
जप करि आनन्द बढावई॥ विश्व मन जीते सभ इंद्रि

न के दोष जाय मलहू नसाय सुख आतम सो होवई ॥२

धारणा समाधि ध्यान विधान

कवित घनाक्षरी ॥

जब यही संयम सो थिरताई लहै मन नाभि हियाम। थ नाक जीभ पै जमायके ॥ प्रणव के भाव को जो ईश्वर को वाच कहै चित में विचारै सोइ धारणा वसाय के ॥ धारणा के संत सर्वज्ञ ईश मध्य पुनि लायकै समाधि ध्यान मग्नता में छायके ॥ विश्व जिमि पावक में लोह तदाकार होय जीव लहै सुख सोई ईश्वर को पाय के ॥२३॥ प्रायः कहत जाको रूप जौन रंग रेख तासु कौं न भांति ध्यान साधक लगाइ है ॥ जाको रूप हूं ना देख्यो जौन जासु तन कोई कैसे तासु दरश की भावना जमाइ है ॥ काहि मिलि जीव दुख दारिद्र विसारी है जो क

हां कौन पास सुख आनन्द को पाइहै ॥ विश्व यहि भांति नर कहत विचारहीन ध्यान दे सुनो जो आगे साधक बताइहै ॥ २४ ॥

उत्तर

कवित्त घनाक्षरी

प्रथम विचारो जो नियम द्वारा भंग जग हे तुनम नायक ने आप ही बनायो है ॥ जेती रूप रंग रेख वाली वस्तु देखि यत सभन को एक दिन काल खाद बायो है ॥ आज जि न्हे देखियत कालि वे रहत नाहि साथ में संयोग के वि-योग को लगायो है ॥ विश्व जो बनो है ताके संग है विगा र गुण काहू आश्रय सुख ना अनित्य बीच पायो है ॥ २५ यदि रूप रंग रेख सहित मनावैं ईश फेरि तन धारण अवश्य ताहि होइ है ॥ जद तन धारो तो विकार सौ मायु त भयो यक देशी पुनि काल पाय तन खोइ है ॥ जन्म

श्रो मरण को लगै गो दुक्ख वा के संग ऐसो इष्ट देवसे
य कौन नित रोइहै॥ विष्व ना हटत मल मल ही के
जल धोय जव लों न मुक्ति हेतु मुक्त रूप जोइहै॥२६॥
यदि सदा रूप रस रंग रेख ही को ध्यान होत यासे विल
गन श्रोर होय पारे है॥ फेरि दुक्ख सुख जो सदा ही से है
रूप हीन तिन को विचारो ध्यान कैसे जीव धारे है॥
पुनि जीव रूप श्ररु सीमा युत वस्तुन सों सदा कौन
प्रीति करै हटत सवारे है॥ विष्व जव लों न देखै तव
हीं लों प्रिय होत एक वार देखि फेरि श्रनत निहारे
है॥२७॥ जव रूप श्रोर श्रादि श्रंत वाली वस्तुन पैद्द
ढन जमत नित श्रागे ही को जात है॥ फेरि तौ श्रनादि
श्रौ श्रनंत ही ठिकान याको ठीक है न जाकी कवौ मैं
जलि सिरात है॥ ज्ञान ही की निगह से जैसे श्रापु भीन

तन वैसे महा भीन ब्रह्म रूप को लखात है ॥ विश्वनित
नव प्रेम बाढत अगाध मध्य ऐसो इष्ट देव पाय जीव
हुलसात है ॥ २८

सोरठा

देह तजत जब जीव इन नयनन नहि लखि परै ॥
फिरि केहि विधि जग पीव देखि सकै इन दृगन कोउ ॥

मुक्ति विषय वर्णन

दोहा

जाकी जासु उपासना तदाकार के भेद ॥
तामे ताके होत गुण याविधि गावत वेद ॥ १
क्षण भंगी द्रव्यन विषय क्षण भंगी सुख होत ॥
नित्य मुक्त सम बन्ध सो मिलत सदा सुख सोत ॥ २

चौपाई

बन्धमुक्त द्वै भेद कहाये ॥ ॥ ॥
जो जग जीवन आपु कमाये ॥ १॥
मुक्त जीव इन्द्रिन वश राखै ॥ ॥
ताते सदा धर्म रस चाखै ॥ २ ॥
बन्ध जीव इन्द्रिन वश होई ॥
चहत अविद्य हि विद्या खोई ॥ ३
पर वश स्ववश आपु होय पारे ॥
जीव अविद्या विद्या धारे ॥ ४ ॥
जिन विद्या गहि आपु संभारा ॥
पञ्च कोश कर कीन विचारा ॥ ५ ॥
तिन इन्द्रिन कह निज वश जाना ॥
लहेउ आत्मिक सुख मन माना ॥ ६ ॥
यथा कीरन लिकाल टकाये ॥ ॥

सोगति जीव अविद्या पाये॥७॥

विद्या सों जब करै विचारा॥ ॥

तब उत्तरै दुख सागर पारा॥८॥

दोहा

सो विद्या वेदन विषय आवत सद्गुर पाय॥

यज्ञासु खोजै जबहि मुक्ति सुलभ होय जाय॥३

मुक्ति नाम है छूटना जाकी सब कहं चाह॥

ताको कछु वर्णन करों बेद शास्त्र की राह॥४॥

दुक्ख ऽत्यन्ता भाव कहं ऋषि वर कपिल वदार॥

सांख्य शास्त्र महं लिख्यो है मुक्ति स्वमत अनुसार॥५॥

चौपाई

सो दुख तीनि भांति के गाये॥

जो सब जीवन मन अन भाये॥

आध्यात्मिक ज्वर मिसिरोगा ॥ ॥
जिन सों होत शरीर के रोगा ॥॥
जो दुख दूजे प्राणिन पाई ॥ ॥
होय आधि भौतिक सो आई ॥ ॥
मन इन्द्रिन की चंचल ताई ॥ ॥
सों जो होत दुक्ख आधि काई ॥ ॥
ताहि आधि दैविक समुझायौ ॥
मुक्त दशा महं सकल छोडायो ॥
ऋषि पातञ्जलि योग विधायक ॥
याविधि लिखत मोक्ष सुख दायक ॥
पंच क्लेश जेहि छिन मिटि जाही ॥
तबही मुक्ति होत शक नाहीं ॥ ॥
विलग विलग सब क्लेश गनायो ॥

प्रथम अविद्याऽस्मि दरशायो ॥

दोहा

शेष चारि की मातुमि स्सि कहेउ अविद्या क्लेश ॥
जाके मन महं वास सों मृत्यु गहत नित केश ॥ ६
नाम अविद्या भूल कर रहित यथा रथ ज्ञान ॥
तासु सुगमता हेतु कछु लक्षण करौ बखान ॥ ७ ॥

कवित्त घनाक्षरी

कारज जगत औ शरीर आदि नाश मान तिन्हे जानि नि
त्य मोह अधिक बढ़ावना ॥ कारण प्रकृत जीव ईश्वर
जो नित्य रूप तिन मे अनित्य बुद्धि भ्रम सो जमावना ॥
ताल कूप सरितादि हार पाप दूरी मानि तन मल खानि
ताहि शुचि कहि गावना ॥ पर उपकार सत्य भाषण
अहिंसा आदि ईश्वर उपासना मे अशुचि की भावना ॥ १ ॥

मति का पषान काठ सकल अनात्मन चेतन समुभि निज विनती सुनावना॥ ईश्वर चेतन मुक्त रूप को बनाय जड़ ताहि अल्पज्ञ और भ्रमित बतावना॥ काम क्रोध मद लोभ मोहि बीच सुख मानि सम संतोष ना विवेक सुख भावना॥ विश्व एते लिखित अविद्या परिवार सब याही को विरुद्ध ज्ञान विद्या है बसावना॥२॥

चौपाई

दूजा क्लेश अस्मिता आही॥ ॥
अहंकार भावत अति जाही॥ ॥
तीसर क्लेश राग दुख दाई॥ ॥
पुनि पुनि भोगित सुखन चेताई॥
चौथ द्वेष साधन कर द्रोही॥ ॥
करत भंग उत्साह विमोही॥ ॥

अभिनिवेश पंचम् करि गाई॥
जो मृत्यु के दुख देत सदाई॥ ॥
इनहीं पञ्च क्लेश के नासे॥ ॥ ॥
जीव मुक्ति सुख सकल बिलासे॥
आगे सुनौ जो गौतम गायो॥ ॥
न्याय शास्त्र लिखि भल समुझायो॥
मिथ्या ज्ञान अविद्या माना॥ ॥ ॥
जिमि पातञ्जल प्रथम बखाना॥
ताके नष्ट होत दुख जाई॥ ॥ ॥
लहत मोक्ष सुख जीव अघाई॥

दोहा

लिख्यो व्यास वेदान्त महं पराशरी मत जानि॥
बसत शुद्ध मन सहित जिय मुक्त ईश बिच आनि॥८

चौपाई

इन्द्रियादि कर कहेउ अभाऊ ॥ ॥
जैमिनि कर मत सुनो अगाऊ ॥
मुक्त दशा में जिमि मन रहई ॥ ॥
शुभ संकल्प मई तनु गहई ॥ ॥
शुद्ध ज्ञान कर सदा प्रकाशा ॥ ॥
इन्द्रिन शक्ति होत नहि नाशा ॥
व्यास अभाव भाव दोउ माना ॥ ॥
जेहि विधि सो सब सुनहु सुजाना ॥
अज्ञानादिक दोष अशुद्धी ॥ ॥
केर अभाव भाव सुख वुद्धी ॥
याँलों शास्त्रन को मत गायौ ॥ ॥
मुक्त दशा को सुख दर्शायौ ॥ ॥

मुक्त जीव वसि ईश्वर माहीं॥ ॥

महा कल्प लगि सुखी सो हाहीं ॥

जग मह जन्म लेत पुनि आई॥ ॥

इमि मुण्डक उपनिषद् बताई॥

दोहा

साधन मुक्ति ससीम जिमि तथा ससी मानन्द॥

जीव भोग सों न्याय युत छोड़ि सकल भ्रम फन्द॥९॥

यथा जीव अल्पज्ञ अरु यथा अल्प सामर्थ्य॥ ॥

तथा अन्त कर तव्य कर न्याय नियम नहि व्यर्थ॥१०

जव हि दुष्ट कर्तव्य सव नष्ट जीव के होत॥ ॥

तवही यह अमृत वनत खुलत अनन्दो स्रोत॥११॥

अव्याहत गति वस्तविच सहित शुद्ध संकल्प॥

शुद्धेन्द्री ओर मन फेरत दुक्ख न व्यापत स्वल्प॥१२॥

कवित्त घनाक्षरी

प्रायः कहत लय ईश्वर में होत जीव फेरि जग आवना व
नत कौन भांति सों॥ जेहि को मिल्यौ है मुक्ति रहे सो अन
न्त काल जैसे जल जल में मिलत एक जाति सों॥ जब
एक भये मिलि फिरि ना विभेद रह्यो निकसि गयो सो सदा
मृत्यु की कुघात सों॥ विश्व इमि कहें माने आपने को ईश
अंश जिमि मृग घात कै हटावें जल स्वाति सों॥ ३॥

उत्तर

कवित्त घनाक्षरी

प्रथम विचारो जब जीव ईश माहि मिल्यो रहे उना वि
लग कौन मुक्ति सुख पाइहै॥ भोजन करै या जब भो
जन बने गो आपु फेरि कहो अन्न भला कौन काज आ
इहै॥ जहां मुक्ति साधन शरीर आदि अंत वाले तासु

सिद्धि कैसे को अनन्त काल जाइ है॥ विश्व जाके अंश को मिलन बिछुरन होत एसो ईश कैसे को अखण्डित होइ है॥४॥

वेद विषय वर्णन

दोहा

यद्यपि सत्य विद्या सकल पूरी वेदन माहि॥
मुख्य विषय तदि चार हैं समझे भ्रम मिटि जाहि॥४७॥

चौपाई

चो महं प्रथम जानु विज्ञाने॥
शेष तीनि कहं जो सन्माने॥८२॥
देत यथावत ज्ञान सो सारा॥
जो लक्षण ईश्वर लग विस्तारा॥८३॥
जेहि सों जो जग है जेहि योगा॥
नर लै सकत उचित उपयोगा॥८४॥

दूसरि कर्म्म काण्ड की रीती ॥
साधक सिद्धि करत मनचीती ॥८५
जैहि विनु सकल अगम हो जाई ॥
करत लगत नहिं वनत वनाई ॥८६॥
दुइ प्रकार के कर्म्म वखाने ॥ ॥
स्वारथ पर मारथ विधि ठाने ॥८७॥
निज सुख साधक कारज जेते ॥
धर्म्म न्याय युत स्वारथ तेते ॥८८॥
जो कछु पर सुख उन्नति हेतू ॥ ॥
होत सोई पर मारथ चेतू ॥८९॥

दोहा

अग्नि होत्र नित कर्म्म से अश्व मेध तक जोइ ॥
करै सो पर उपकार सम अगणित सुखप्रद होइ ॥८

चौपाई

यज्ञ सों उत्तम कर्म न कोई ॥ ॥
जाहि किये सब कहं सुख होई ॥६०॥
जबहि सुगंधित द्रव्यन जोरी ॥ ॥
देत अग्नि महं आहुति बोरी ॥६१॥
अग्नि तासु तत्वन विलगावे ॥ ॥
करि सूक्षम मारुत ढिग लावे ॥६२॥
मरुत मेघ मण्डल लै जाई ॥ ॥
जल दूषण सब देत मिटाई ॥६३॥
सो जल जबहि भूमि पर आवे ॥
बहु उत्तम औषधि उपजावे ॥६४॥
सकल प्राण धारिन हित सोई ॥ ॥
औषधि तन सुख दायक होई ॥६५॥

अग्नि वायु जल भूमि अकासा ॥

होत पवित्र यज्ञ की आसा॥ ६६॥

पुनि इन पंच तत्व के जेते ॥ ॥ ॥

सुत रे बने लहत्त सुख तेते॥ ६७॥

दोहा

एक यज्ञ के किएसों कितने नर कहँ सुख होय॥

वाही को जीवन सुफल पर उपकारी जोय॥५६॥

चौपाई

जब लगि भारत खण्ड निवासी ॥ ॥

रहे सभ निज निज कर्मा ऽ भ्यासी॥ ६८॥

तब लग हवन रु यज्ञ प्रभाऊ॥ ॥ ॥

मरी रोग फैलो नहि काऊ ॥ ६६ ॥ ॥

फूलित फलित रही यह धरणी ॥ ॥

भये अनेक न धर्म्म चरागी॥१००॥

रहे परस्पर सभ अविरोधी॥ ॥

राजा प्रजा धर्म्म पथ सोधी॥१०१॥

जब से वेद हि दीन भुलाई॥ ॥

भई अविद्या की अधिकाई॥१०२॥

विप्रन पाठन पठन भुलायो॥।

क्षत्रिन विषया शक्त लुभायो॥१०३॥

वैश्यन कृषी कर्म सभ त्यागा॥ ॥

कपट तुला अति उत्तम लागा॥१०४

भे वर्णाश्रम तजि निज कर्मा॥ ॥

बने सकल निन्दक श्रुति धर्म्मा॥१०५

दोहा

जब याविधि यहि देश सों विद्या कीन पयान॥

तवहीं से वाढी विपति प्रीति किर वसुरभान॥६०

चौपाई

जिन चाहे उतिन आनि दवायो॥
नारि भूमि धन सकल छिनायो॥१०६
निज निज नाम न सां पंथाई॥ ॥
जिन चाहो तिन दियो चलाई॥१०७
जिमि जिमि पंथ अनेकन वाढे॥
तिमि तिमि होन लगे दुख गाढे॥१०८
वैदिक मता सना तन जोई॥
ताहि भुलाए भला कि होई॥१०९॥
सदा न चलत कपट की हाटा॥
कागद नाव न लावत घाटा॥११०
अंत खुलत बूड़त मंझधारा॥ ॥

विनु सच्चे के वदी सहारा॥१११॥
सच्चा के वटयां जग माहीं॥ ॥
वेद हि छोड़ ज्ञान कोउ नाहीं॥११२
निज दासन हित पंथ सुखाला॥
वेद बतायो दीन दयाला॥११३॥

दोहा

आप स्वारथ वश मलिन मति तिन कर नाम कुपाय॥
नाम चलावत आपनो निज पर धर्म्म नसाय॥६

चौपाई

श्री मद्दे दशरथ सुखरासी॥ ॥
स्वामी दयानन्द सन्यासी॥११४॥
जिन निज प्राण वेद हित लागी॥
कीन समर्पण जग सुख त्यागी॥११५

डूबत सभहि देखि दुख माहीं॥ ॥
वेद हीन वर्णाश्रम नाहीं॥११६॥
महा मृदुल चित सहि नहि पारेउ॥
कटि कसि वेद भाष्य करि डारेउ॥११७
करि पर जटन वेद रवि लाई॥ ॥
भ्रम पंथी तम दियो मिटाई॥११८॥
सभ विधि कियो जगत उपकारा॥
डूबत वेड़ हि फेरि उभारा॥११९॥
सर्वाधार ईश को ज्ञाना॥ ॥ ॥ ॥
ऋग्य जु साम अथर्व बखाना॥१२०॥
रहे जितेक कुरान किरानी॥ ॥
वेद विरुद्ध पंथ अभिमानी॥१२१॥



दोहा

सबहि सत्य उपदेश करि मिथ्या मान छुड़ाय ॥

सुलभ दिखायो वेद मग प्रभु आज्ञा दर्शाय ॥६२॥

वेद शास्त्र तीरथ भले ब्रह्मचर्य्य व्रत नीक ॥ ॥

विद्यादान न दान बड़ जिन की स्तुति महँ लीक ॥६३

यई सत्युतम कर्म हैं जो आतम सुख देत ॥ ॥

भव सागर उतरत सुजन बांधि इनहिं के सेत ॥६४॥

तीसर विषय उपासना प्रथम लिख्यो निरवारि ॥

जासु किए सुख आत्मिक उपजत हृदय विचारि ॥६५

चौपाई

चौथ प्रसिद्धि ज्ञान मर्य्यादा ॥ ॥

मिलत मुक्ति फल जासु प्रसादा ॥१२२॥

जामें अंग तिम जीव भलाई ॥ ॥ ॥

जन्म मरण को रोग नसाई ॥१२३॥

फेरि न रहत मोह भ्रम ताही ॥ ॥ ॥

मिलत ज्ञान मणि जब जहं जाही ॥१२४

जानत मर्म यथा वत सारा ॥ ॥ ॥

कारण काज नित्य व्यवहारा ॥१२५॥

होत अकाम कर्म सभ तांते ॥ ॥

भव सागर बंधन कटि जाते ॥१२६॥

येई मुख्य विषय श्रुति चारी ॥ ॥ ॥

जो संक्षेप हि लिखे उं हं कारी ॥१२७॥

वेदन महं इन कर विस्तारा ॥ ॥ ॥

जो सभ सद्धि घन भंडारा ॥ १२८ ॥

जो निज चहै जन्म सफ लाई ॥ ॥॥

गहै सो वेदन की सरणाई ॥ १२९ ॥

दोहा

शरीर कर्म माजि कर सहित आत्मिक भोग ॥
आवत वेद प्रताप सों मिटत अविद्या रोग ॥ ६६ ॥

सोरठा

महा यज्ञ हैं पांच जो करनी सबकहुं उचित ॥
भस्म होत जेहिं आंच सकल अविद्या मलभसम ॥
जो नित सहित विधान करत बैठि एकांत महं ॥
उदय होत रवि ज्ञान नसत तिमिर भ्रम शीघ्रहीं ॥
तिन को लिखो उपाय जेहि प्रकार करनो उचित ॥
सुनहु सुजन मन लाय सुफल करहु करि नर तनहिं ॥

ब्रह्म यज्ञ

चौपाई

प्रथम स्वच्छ जल करि अस्नाना ॥ ॥

वहिर शुद्धि जो वेद वखाना ॥१३१॥
पुनि तजि राग द्वेष ई षोदी ॥ ॥ ॥
अन्तःकरन शुद्धि प्रति पादी ॥१३२॥
होय अकन्त चितवृत्ति राखी ॥ ॥
आसन बैठि शान्ति रस चाखी ॥१३३॥
पढि गुरु मंत्र बांधि शिर केशा ॥ ॥
जानि ईश कहं हरन कलेशा ॥१३४
शन्नो देवी अर्थ समेता ॥ ॥ ॥
पढि त्रैबार आचमन लेता ॥१३५॥
औस्वाक कहि इन्द्रिय र्शी ॥ ॥ ॥
जासों बल देवे सम दर्शी ॥१३६॥
भूपु नातु आदिक तद पाठे ॥ ॥
करै मार्जन कहि विधि आठे ॥१३७

पुनि करि ओं भूः कर ध्याना ॥
प्राणायाम करे श्रुति माना ॥२३॥
प्रेम सहित मन हर्ष बढ़ावे ॥ ॥
ॐ ऋतंच ऽ घमर्षण ध्यावे ॥२४॥

दोहा

करि मन सादिग परिक्रमा प्राचिदिग मिव जोय ॥
पढ़ै ह्यय गद्व द व य नम नसा के मन्त्रोय ॥६७॥
उद्वय मादिक जे श्रुती उपस्थान के मंत्र ॥ ॥
प्रेम सहित तिन कहँ पढ़े छूटे पातक यंत्र ॥६८॥

सोरठा

तब गायत्री पाठ करै अर्थ युत नियमसो ॥ ॥
जिमि पावक महँ काठ जरै जरैं मल घातमिव ॥

दोहा

प्रेम सहित सोई तर्पण भेवा ॥ १५४ ॥

जेहि सो तृप्त होय सुख पावै ॥ ॥ ॥

सदुपदेश अमृत वर्षावैं ॥ १५५ ॥

दोहा

आसन दे पग धोय कै अरु निज भाग्य सराहि ॥

से दै उत्तम रसन सों सेवक धर्म निवाहि ॥ ७८ ॥

चौपाई

दोउ कर जोरि ठाढ़ होय आगे ॥

पुनि तिन सों आज्ञा इमि मांगे ॥ १५६

पित मोहि शिक्षा सोई दीजे ॥ ॥ ॥

जेहि सों मोर मोह भ्रम छीजे ॥ १५७ ॥

मैं सेवक सुत नारि समेता ॥ ॥ ॥

नाथ रहू वनित आय सुदेता ॥ १५८ ॥

करै जो इमि पित्तनकी सेवा॥ ॥ ॥
समुझि श्राद्ध तर्पण ऋषिदेवा॥१५९॥
सोइ उत्तम स्रुति मारग पाले॥ ॥
कबहुं न तासु परै पग खाले॥१६०॥
सद्ग्रन्थन यह तीरथ गाये॥ ॥ ॥
जिन कहं सेय सबन फल पाये॥१६१
इनहिं छोडि जो इत उत धावै॥ ॥
वृथा सो मूरख जन्म गवांवै॥१६२॥
तिन कर श्रम सभ निष्फल जाई॥
भानु वारि जिमि म्रग हि भ्रमाई॥१६३

दोहा

इनकहं सेवै बैठ घर जो ग्रहस्थ मतिधीर॥ ॥
इष्टदेव जानै हरि हितासु मिटै भवभीर॥७९॥

दोहा

विल्व किंशुक पलास वा चंदन समिधा लाय ॥
सूखी सूखी सोधि कै तामें देय जमाय ॥ ७३ ॥
एक आज स्थाली विषय सोधित घृत दधि लाय ॥
केसरि कस्तूरी रगड़ि तामें लेप मिलाय ॥ ७४ ॥
जल भरिकै यक पात्र महँ चमसा चिमटा लाय ॥
सामग्री सब साजि कै धरैं कुण्ड नियराय ॥ ७५ ॥
सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योति अरु अग्नि ज्योति र्ज्योति ॥
ओम्भूर ये मंत्र पढि आहुति देनो होति ॥ ७६ ॥
प्रातरसायं काल महँ ब्रह्म यज्ञ पश्चात ॥ ॥
देव यज्ञ नित प्रति करैं हर्षित चित मन गात ॥ ७७ ॥

पितृयज्ञ

चौपाई

तीसरि पित्र यज्ञ कहु वेदा ॥ ॥

तर्प्पण श्राद्ध जासु दुइ भेदा ॥१४८॥

पिता पितामह मातु महादी ॥ ॥

देव रु ऋषि हि पित्र मर्य्यादी ॥१४६॥

कायक वायक मनसिक साचो ॥

करै जो कर्म्म देव तेहि वाचो ॥१५०

पढ़े जो वेद पढ़ावै ज्ञानै ॥ ॥ ॥

श्रुति स्मृति ऋषि ताहि वखानै ॥१५१

जव जव मिलैं पित्र जहँ जाके ॥

सेवन करै प्रीति मन लाके ॥१५२॥

श्रद्धा युत जो सेवन होई ॥ ॥ ॥

तिन कर श्राद्ध कहावत सोई ॥१५३

खान पान वस्त्रन की सेवा ॥ ॥ ॥

नमोशम्भु वाक्य च कहत ईश सम पैरा कर्म ॥
करै लहै सोई परम पद यही मनुज तन धर्म॥६९॥
ब्रह्म यज्ञ याको कहत लिखेउ मनू महाराज॥
करै अमित आनंद लहै सुधरैं दुहुं दिशि काज॥७०॥
देव यज्ञ है दूसरी हवनादिक शुभ काज ॥ ॥
वेद मंत्र सों नित करै नासै रोग समाज॥७१॥

सोरठा

हवन कुण्ड परमान लिखौं प्रथम जहं जिमि बनै॥
तदुपरि पात्र समान अरु सामग्री हवन की ॥ ॥

चौपाई

स्वच्छ भूमि अरु उत्तम देशा ॥ ॥ ॥
पाय यज्ञ कर करै निदेशा॥१४०॥
यदि पच्छी होवै कछु वेदी॥ ॥ ॥

स्वच्छ निकासि लेय कछु खोदी॥१४१॥

पुनि तहँ शुचि मृतिका बिछावै॥

चहुं दिशि उत्तम थान बनावै॥१४२॥

जल सेंचन करि धूरि बिठाई॥॥

गोमय सों देय लिपाई॥१४३॥

मध्य भाग मह कुण्ड बनावै॥॥

सोरह अंगुल भूमि खुदावै॥१४४॥

सो लम्बा चौड़ा हो एता॥ ॥॥

लिखो प्रमाण गहिरई जेता॥१४५॥

पैंदी तासु होय चौथाई॥ ॥॥

जो ऊपर की नाप बताई॥१४६॥

ऊपर खुला सांकरा नीचे॥ ॥॥

सहुत्साह तेहि जल सों सींचे॥१४७॥

भूत यज्ञ

चौपाई

भूत यज्ञ पुनि चौथि कहावै॥ ॥
सभ जीवन पर दया बढ़ावै॥१६४॥
प्रथम सभहि भोजन करवावै॥
आप सबन से पीछे खावै॥१६५॥
यह बलि वैश्व देव कर कर्मा॥ ॥
सभ मिलि करहि सनातन धर्मा॥१६६
स्वान पतित रोगी दारिद्री॥ ॥ ॥
वायस कृमि चींटी भूछिद्री॥१६७॥
इनकर प्रथमहि भाग बनाई॥ ॥
जो जहँ तहां देय पहुंचाई॥१६८॥
अन्य जो पङ्गु अन्ध वृद्धादि॥ ॥

तिन हित देय भोजन सत वादी॥१६९॥

भूत यज्ञ यह कहेउं बखानी॥ ॥ ॥

करहिं जो नित प्रति सज्जन प्राणी॥१७०

यही परुपकारी नित कर्म्मा॥ ॥

करत जे जानत सत पथ मर्म्मा॥१७१

दोहा

करै भरोसा राम कर यथा शक्ति कर दान॥ ॥ ॥

दीनन पर राखै दया यहि सम धर्म्म न आन॥८०॥

अतिथि यज्ञ

चौपाई

पंचम अतिथि यज्ञ श्रुति गावै॥ ॥

जो विद्या सत्कार कहावै॥१७२॥

सत्याचरणी वैदिक नादी॥ ॥ ॥

दोहा

पंच यज्ञ वर्णन किहेउं वैदिक ग्रंथ निहार।।
विश्व करें सज्जन क्षमा यदि कछु चुक विसारि।।८१

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सूची पत्र

जिन हिन मोह त लोभ प्रमादी॥१७३॥
सदुपदेश जे सभहि सुनावैं॥ ॥ ॥
जग सें अंधकार दुरियावें॥१७४॥
अतिथि रूप विचरै सभ याहीं॥ ॥
सदु चित काम क्रोध मन नाहीं॥१७५
पूजन योग अतिथि जग सोई॥ ॥
जो पूरण विद्या युत होई॥ १७६॥॥
जब यहि भांति अतिथि आपवें॥ ॥
यही सेपता को काम हवै॥ १७७॥ ॥
तिन कर सदुपदेश सुनि मानै॥ ॥ ॥
सफल जन्म अपनो करि जानै॥१७८॥
अतिथि यज्ञ है याको नामा॥ ॥ ॥
जाके किये बनै पर धामा॥१७९॥॥

कवित घनाक्षरी

कपट विषय औ काम क्रोध लोभ मोह युत लंपट पराई हानि नितही चहत हैं॥ मिथ्या वादी आलसी कुसंगी और विद्या हीन हठी सदा छोडि सत असत गहत हैं॥ दाता के निमंत्रण पै भांग औ धतूर खाय एक के वो लाये चारि जात ही रहत हैं॥ विप्र नेकु चूक सो विसारि देयं सारी सेव ऐसे दुर्जनन को दान ना लहत हैं॥ १॥

पर उपकारी ब्रह्मचारी औ सुशील बुध योगी वेद पाठी नित चित को बदार है॥ मान अपमान भान एक रस जानि सुज्ञान विद्या गुण ग्राहक सदुपदेश कार है॥ सुखी पर लाभ दुखी आन की निरखि हानि जानै पुरुषारथ को मूल वस्तु सार है॥ विप्र ऐसे सज्जन को नित दान देयं बुध जिनैं परमारथ को सुख दरकार है॥ २॥

१ ओं

१) कमीजादि
२) धोतीदुपट्टा
III) उती
III) साफ २

ओं नमः